आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी प्रेस क्लब

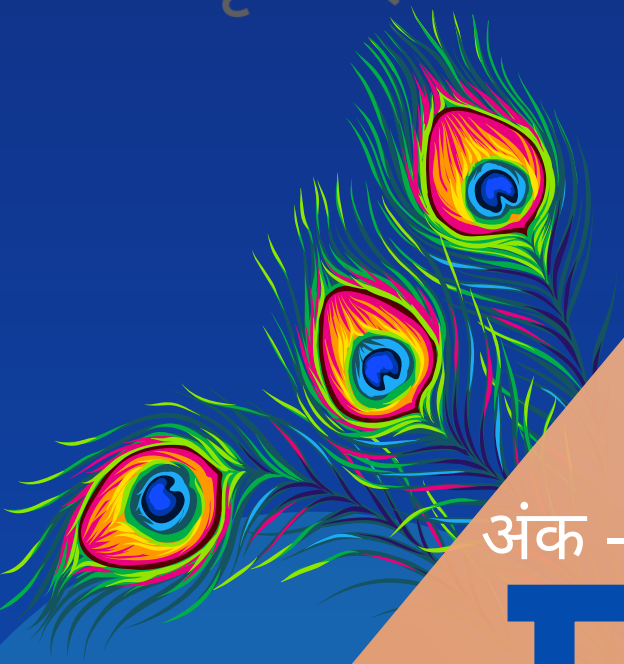

अंक - 1, सत्र - 1, 2022-23

प्रवाह

हिंदी प्रेस क्लब

संपादकीय

इस धरा पर जितने भी जीव है, उन सबका जीवन एक संघर्ष है। चूँकि हमने हमारे नज़रिये से सिर्फ मनुष्य के जीवन का ही सूक्ष्म आँकलन किया है, तो मैं उसी के बारे में चर्चा करूँगा। संघर्ष, कठिनाईयां, तकलीफ़ें, दर्द आदि अनेक ऐसी संज्ञा है, जिससे मनुष्य टूटा भी है और एकजुट होकर, साहस दिखाकर अपने जीवन को और बेहतर बनाने के लिए उसने इन सबका सामना भी किया है। कुछ ऐसी ही एक भावना है आज़ादी, जिसने ना सिर्फ एक राष्ट्र के कण-कण को एकजुट किया बल्कि अपने शत्रु से लड़ने का साहस भी दिया। आज़ादी एक ऐसी भावना है जिसे पाने के बाद यह दिन एक राष्ट्रीय उत्सव में तब्दील हो गया। यह एक ऐसा त्यौहार है जिसका सबको हर वर्ष बेसब्री से इंतज़ार होता है और सभी देशवासी मिल के इसे एक नए उत्साह और उल्लास से मनाते हैं। भारत जैसे देश में, जहा त्योहारों की इतनी मान्यता है, वहाँ आज़ादी के इस महोत्सव का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। यह त्यौहार हमें आज़ादी का महत्व मात्र याद नहीं कराता है बल्कि हमारे लिए उन अमर बलिदानों को याद करने का एक पैगाम भी लेकर आता है जिन्होंने इस आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। हालांकि, स्वतंत्रता दिवस को एक त्यौहार के रूप मे मानना, यह नहीं कहता कि आज़ादी की उस भावना को मात्र उस दिवस पर ही याद किया जाए। विडम्बना यही है कि आज हमारी भावना उल्लास और देशप्रेम से भटकते हुए तारीख पर आ रुकी है। पाठकों को यह बताना मेरा कर्तव्य है कि यह भी एक देशप्रेमी की तकलीफ़ ही है।

तकलीफ़ों पर दोबारा अपना ध्यान एकान्द्रित करें, तो कुछ ऐसी भी तकलीफ़े हैं जो पूरी मानवता के लिए एक चिंता का विषय है। गरीबी एक ऐसा ही संकट है, जिससे आज मानव जाति अपनी ही दुश्मन बन गयी है। गरीबी मनुष्यों के लोभ से उत्पन्न हुई है और आज यही मानव को खुद से दूसरों कों भिन्न करने का कारण बन रही है। अब सवाल यह है कि मैं किस गरीबी कि बात कर रहा हूँ। धन की? सोच की? आशा की? अभिलाषा की? आखिर हम सब कही ना कही से गरीब ही तो है। हम चाहे तो निराशा को आशा मे बदल सकते है, अपनी सोच को अभिलाषा मे बदल सकते है और गरीबी कों अमीरी मे।

हमारा ध्यान मात्र अपने दुःख-दर्द पर स्थिर नहीं रहता है, हमारे जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि हम अपने साथ समस्त धरती और इस पर पल रहे हर एक जीव का दुश्मन बनते जा रहे हैं।

अपने लोभ तथा अहंकार में मद मनुष्य यह भूल रहा है कि सिर्फ वही एक प्रकृत्ति की देन नही है, उसके लोभ के कारण आज कई जीव-जंतु लुप्त हो चुके हैं, कई लुप्त होने की कगार पर हैं, और ऐसा ही चलता रहा तो अंत में मनुष्य अपने ही कारण इस धरा पर लुप्त होने वाला आखिरी जीव बचेगा। अतः हमें अपने विचारों की पुनः अंकगणणा करनी होगी तथा अपने प्रभेद के अंगों को पुनः स्थापित करना होगा।

इस अंक के संपादकीय के अंतर भाव में दर्द की भावना और एकजुट होकर उसका सामना करने की आकांशा से हमारा उद्देश्य मात्र यही है कि हम सभी कों सद्भावना से हर एक जीव का सम्मान करते हुए अपनी जिंदगी का अवलोकन करना होगा और उसे आसान बनाने का हर संभव प्रयास करना होगा।

इस अंक में आप अगस्त माह में हुई गतिविधियों के संक्षिप्त और सटीक वृतांत पाएंगे, और साथ ही कुछ रोचक किस्सों से अपना ज्ञानवर्धन करेंगे।

अनुक्रमणिका

- बिट्सियन दिवस 3
- PRT से साक्षात्कार 4
- निर्माण अध्यक्ष से साक्षात्कार 6
- यादों का सफर 8
- आज़ादी का अमृत महोत्सव 9

बिट्सियन दिवस

दस वर्ष पहले, 2012 में, बिट्सियन दिवस एक सोच के साथ आरम्भ हुआ था, जिसमें सब बिट्सिन अपनी बिट्स की टी-शर्ट पहन कर काम पर जाते थे। इस वर्ष यह सोच केवल कपड़ों तक सीमित नहीं थी। यह साल तीन दिनों के लिए, 5 – 7 अगस्त, पूरे विश्व में बिट्सियन ने यह उत्सव मनाया।

BITSAA द्वारा देश-विदेश में मिलन समारोह आयोजित कराये गए थे। इसके अलावा देश-विदेश के असंख्य विश्वविद्यालय से लेकर दफ़्तरों तक में बिट्सियन एक साथ आये और अपनी एकता का प्रदर्शन सोशल मीडिया पर किया। यह सम्मेलन बिट्स जैसे विशाल कुटुंब का एक महत्वपूर्ण और अविभाज्य हिस्सा है। एक छात्र के लिए यह प्रेरणा और नए संबंध बनाने का काम करते हैं और स्नातकों के लिए पुरानी यादें ताज़ा करने का काम करते हैं। बिट्सियनस दिवस पूर्व और वर्त्तमान बिट्सियन को हर देश, स्तर और क्षेत्र के बिट्सियन से अवगत कराता है। BITSAA के अलावा विद्यार्थी समूहों ने भी बिट्सियन दिवस बहुत धूम-धाम से मनाया।

पिलानी कैम्पस के पूर्व-छात्र संबंध प्रकोष्ठ ने इन तीन दिनों में तीन कार्यक्रम आयोजित करवाए। पहले दिन बिट्स के 5 जाने- माने वेंचर कैपिटलिस्ट के साथ, भारत की वर्त्तमान अर्थव्यवस्था और मंदी की संभावना पर एक पैनल चर्चा हुई। दूसरे दिन **"अल्फासेंसे"**, जिसके सह-संस्थापक एक बिट्सियन हैं, की यूनिकॉर्न स्टार्टअप बन्ने तक के सफ़र को जानने

हेतु उसके सह-संस्थापक से बातचीत करवाई गयी। फिट-बिट्स के साथ सांझेदारी में इन्होंनें एक वर्चुअल भाग प्रतियोगिता करवाई जो इन तीनों दिन चली। इसके अलावा हर पीढ़ी के बिट्सियन की एक वीडियो-संकलन सोशल मीडिया पर जारी की गयी। गोवा कैम्पस के पूर्व-छात्र संबंध प्रकोष्ठ ने भी तीन कार्यक्रम करवाए। **"कैप्शन इट"** नामक एक ऑनलाइन स्पर्धा करवाई गयी जिसमे प्रतिभागियों को साधारण चित्रों के लिए असाधारण शीर्षक बनाने थे। इसके बाद एक डिजाईन स्पर्धा करवाई जिसमे भाग लेने वालों को अपने मन से बिट्स के लिए टी-शर्ट और टोपी वाले स्वेटर को डिजाईन करना था। आखिरी में उन्होंने **"फिट-वार्स"** नामक कसरत स्पर्धा करवाई जिसमें जीतने वाले भवन को एक फूस्बॉल टेबल और शीर्ष तीन प्रतियोगियों को धन राशि दी गई। हैदराबाद के बिट्स एम्ब्रयो ने इस अवसर पर अपने असोसिएट डीन के साथ एक बातचीत अपने सोशल मीडिया पर जारी करवाई। साथ ही साथ उन्होंने जर्नल क्लब के साथ मिल कर हिंदुस्तान टाइमस के संपादक, जो बिट्स हैदराबाद के एक पूर्व छात्र हैं, के सफ़र की चर्चा अपनी सोशल मीडिया पर लाइव दर्शाई।

इन विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सोशल मीडिया पर पूर्व बिट्सियन ने अपनी पुरानी तस्वीरों और अनुभवों को जब डाला तो उसके टिप्पणी अंश में मानो बिट्स प्रेम की एक लहर उठ गयी। इन तीन दिनों में पूर्व और वर्त्तमान छात्रों ने कई भावनाओं को महसूस किया जैसे हर्ष, उत्साह, प्रेरणा, यौवन और कई इत्यादि जिन्हें हम शब्दों का रूप नहीं दे सकते। परंतु, अगर एक भावना है जो सभी के मन में अवश्य उत्पन्न हुई होगी, वो है अपनी मात्र संस्था के लिए गौरव।

PRT से साक्षात्कार

"कोई उलझी हुई पहेली आज हल हो गई,
मन में नाचा मोर और बादलों में हलचल हो गई।"
प्रोफेसर संगीता शर्मा, पीकोक रिस्टोरेशन टीम(PRT) की प्रमुख सदस्य हैं। HPC ने उनके साथ इंटरव्यू लिया और उनसे कैंपस पर मोर बचाव के बारे में जाना।

प्रश्न: हमें पीकोक रिस्टोरेशन टीम(PRT) के बारे में तथा इसके कैंपस में कार्य के बारे में बताएं?

उत्तर: वर्ष 2017 में बिट्स पिलानी के 1987 बैच के रीयूनियन के दौरान यह दृश्य उनके समक्ष आया कि मोर की संख्या कैंपस में 1987 के मुकाबले काफी कम हो गई थी। सन् 1987 में मोर की संख्या लगभग 400 थीं। सलमान अली जिन्हे '**बर्डमैन ऑफ इंडिया**' का दर्जा दिया गया था, उनके भांजे रौफ अली भी उनमे से एक थे। हालही में सलमान अली का देहांत हुआ था और उन्ही की याद में यह टीम बनाने का प्रस्ताव रौफ अली द्वारा रखा गया तथा मुझे इस टीम का प्रतिनिधि बनने को कहा गया जिसे मैंने खुशी खुशी स्वीकार किया। इस प्रकार PRT का निर्माण 17 मार्च , 2017 को हुआ।

प्रश्न: बिट्स प्रशासन द्वारा आपको किस प्रकार की सहायता मिली?

उत्तर: बिट्स प्रशासन हमेशा से सहायक रहा है। SR भवन के बगल में हमें 4602.26 sq.mtr. ज़मीन बिट्स द्वारा मिली जहां 200 प्रकार के फलों के पेड़ हैं जिन्हें पक्षियां खूब पसंद करती हैं। इस जगह का उदघाटन बिट्स के कुलपति सौविक भट्टाचार्य द्वारा किया गया था।

प्रश्न: मोरों की संख्या में गिरावट का मुख्य कारण क्या था?

उत्तर: हर पशु को रहने के लिए घर अथवा जमीन की जरूरत होती है। पिछले कुछ वर्षों में कैंपस मे भारी कंस्ट्रक्शन के चलते मोर अपने घरों से वंचित हो गए थे तथा उनकी जमीन पर इमारतें बनाई गईं थी। काफी मोर कुत्तों का शिकार भी बने वहीं कुछ लोग मोर को भोजन के तौर पर खाने लगे। कैंपस में तेज़ चलते वाहन से भी उनको काफी नुकसान पहुंचता है। यही सब कारणों की वजह से मोरों की तायदात कम होने लगी।

प्रश्न: PRT ने किस प्रकार के तरीके अपनाए जिससे मोरों की संख्या बढ़े और उनका क्या नतीजा रहा?

उत्तर: PRT का लक्ष्य था कि बिट्स के कर्मचारी, अध्यापक तथा छात्रों में मोर को बचाने के लिए जागरूकता लाए। उन्हें अनेक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया जिससे उन्हें मोर बचाव के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास हो। चित्र बनाने के मुकाबले से लेकर घोंसले बनाने के मुकाबले तक विभिन्न तरह से PRT ने अपना काम किया। 2019 में गिनती करने पर पता चला कि मोरों की संख्या 65 से बढ़ कर 147 हो गई और हाल ही में कि गई गिनते द्वारा पता चला की कैंपस पर 172 मोर हैं।

प्रश्न: PRT किस प्रकार मोरों की संख्या का अनुमान लगाता है?

उत्तर: इस टीम में मेरे अलावा प्रोफेसर संध्या अमोल मराठे, किशोर सिंह(सिक्योरिटी ऑफीसर), माली तथा पशु चिकित्सक भी हैं। गिनती के लिए टीम के सदस्य छात्रों के साथ मिल कर कैंपस के अलग अलग क्षेत्र में जाकर गिनती करते हैं जिससे हमें मोरों की तायदत का सही अनुमान लगाता है।

प्रश्न: कुछ समय पहले, कैंपस में एक अफ़वा फैली थी की कुत्ते मोरों के अंडे और उनके बच्चों को नुकसान पहुंचाते थे, क्या या बात सच है?

उत्तर: कैंपस में कुत्ते मोरों को नुकसान अवश्य पहुंचाते हैं , वे उनका पीछा करते हैं तथा उनका शिकार करते हैं। PRT पूरी कोशिश करती है की मोरों को अथवा उनके बच्चों को कुत्तों से बचाया जा सके। यदि कोई मोर घायल होता है तो PRT की कोशिश रहती है कि जल्द से जल्द उसे पशु चिकित्सक के पास पहुंचाया जाए।

प्रश्न: पिलानी किस प्रकार से मोरों के लिए एक उत्तम प्राकृतिक वास है?

उत्तर: मोर एक बहुत सुंदर पक्षी है। मोरों को यहां के रहने वाले काफी पसंद करते हैं तथा उन्हें खूब प्यार और चाव से पालते हैं। मोर नाच देखना आंखो के लिए एक सुकून का दृश्य होता है, जिस प्रकार वे अपने रंग बिरंगे पर फड़फड़ाते हैं खास कर वर्षा ऋतु में। अगस्त के माह में मोर अपने अंडे देते हैं तथा उनके बच्चों को खाना खिलाना और उनकी देख भाल करना PRT अच्छे से करता है।

प्रश्न: PRT मोरों के रक्षा तथा उनकी देख भाल पर खूब ध्यान देता है, पर कैंपस में 80 से ज़्यादा प्रकार के पक्षी हैं और उनके साथ भी इन्ही प्रकार की मुश्किले उत्पन्न होती हैं। PRT उनको किस प्रकार सुलझाता है?

उत्तर: टीम में 10 – 10 छात्रों के समूह बनाए गए हैं जिससे कि किसी को कहीं पर भी घायल पंछी दिखे तो वे तुरंत संपर्क करके PRT को बताएं और हम समय रहते उनको चिकित्सक के पास ले जा कर दोबारा स्वस्थ कर सकें।

प्रश्न: कोरोना काल में किस प्रकार टीम ने अपना कार्य किया और कोरोना से मोरों की संख्या में किस प्रकार बदलाव आया?

उत्तर: लोक्लॉडाउन के दौरान जब कोई वाहन सड़को पर नहीं थे, इंसान अपने अपने घरों में बंद थे वहीं पशु पक्षियों के लिए यह एक सुनहरा काल था। उनको किसी प्रकार से ठेस नहीं पहुंच सकती थी और वे आज़ादी के साथ पूरे कैंपस में घूमते थे। इस दौरान अन्य नई प्रकार की पंछीयां भी हमे देखने को मिले। मोर की संख्या निश्चित तौर से बढ़ी होंगी।

प्रश्न: आखिर में आप छात्रों को क्या संदेश देना चाहेंगी?

उत्तर: मैं उनको यही कहना चाहूंगी कि वे पशु पक्षियों से खूब प्रेम करें तथा उनकी रक्षा करें। मोरों की वजह से कैंपस खूबसूरत लगता है और हरियाली भी बनी रहती है। प्रत्येक प्रजाति को जीने का अधिकार है और हमें उनसे वो अधिकार छीनने का कोई हक नही है इसीलिए हमे उनकी देख भाल करनी चाहिए।

निर्माण अध्यक्ष से साक्षात्कार

प्रश्न: आपको इस प्रोजेक्ट को प्रारंभ करने की प्रेरणा कहा से मिली ?

उत्तर: यह प्रोजेक्ट सीनीयरस के मार्गदर्षन एवं कार्यकर्ताओ के जूनून से संभव हो पाया है , इस प्रोजेक्ट का यह प्रथम संस्करण था जिसका लक्ष्य महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता था।

प्रश्न: आपने जरुरतमंदों की पहचान केसे की?

उत्तर: निर्माण के वोलेंटीयर्स जो भिन्न-भिन्न प्रोजेक्ट्स से जुड़े हुए है ,बस्तियों में जाके सर्वे करके जरुरतमंदों को खोजते है ,केम्पस से तीन किलोमीटर दूर नट बस्ती से जरुरतमंदों को ढूँढ निकला है।

प्रश्न:आपने कितनी राखिया बेचीं और कितने जरुरतमंदों को इस प्रोजेक्ट के द्वारा मदद की गयी?

उत्तर: इस बार करीब 500-600 राखीयों की बिक्री हुई है जिससे नट बस्ती के 8-10 महिलाओं की मदद की गयी थी।

प्रश्न: राखियां बेचने पर आपने कितना प्रोफिट कमाया और उसका कितना प्रतिशत आपने दान दिया?

उत्तर: ऑनलाइन तथा ऑफलाइन बिक्री से 25-30 हज़ार का प्रोफिट कमाया गया था और शत प्रतिशत राशि दान कर दी गयी थी।

प्रश्न:लोगो में अगर स्किल्स है तो निर्माण उन्हें केसे मदद कर सकती है ताकि उन्हें एक स्थाई आय मिल पाए ना के अस्थायी समाधान?

उत्तर: हमारा उन्नति प्रोजेक्ट कुछ स्थाई परिणामों की खोज कर रहा है पर ऐसा प्रोडक्ट ढूँढना बहुत मुश्किल है जिसका उत्पादन पूरे साल चल सके, परन्तु भारत की सबसे अनोखी बात यह है की यहाँ बहुत से त्योहार मनाए जाते है और इन त्योहारों पर विभिन्न प्रकार के उत्पादन किये जा सकते है जिससे महिलओं को एक स्थिर आय प्रदान होती है।

प्रश्न:धन राशि के दान किये जाने के बाद ये केसे सुनिश्चित किया जाता है की क्या पैसा सही जगह उपयोग किया जा रहा है?

उत्तर: जो भी दान इकट्ठा किया जाता है वह सीधे ही जरुरतमंदों को नहीं दिया जाता क्योंकि इस प्रकार धन का सही उपियोग सुनिश्चित करना बहुत मुश्किल हो जाएगा, तो एसी स्थितियों में विद्यालयों से जुडकर जरुरतमंदों के बच्चो की फीस भर दी जाती है ताकि उनकी शिक्षा पर किसी भी स्थिति में विराम न लगे, ऐसे ही अप्रत्यक्ष रूप से जरुरतमंदों की सहायता की जाती है।

प्रश्न: यद्यपि ये प्रोजेक्ट महिला सशक्तिकरण के लिए था पर क्या आपको लगता है की इस से पूरे समाज को लाभ मिल सकता है?

उत्तर: एक लोकप्रिय कहावत है निर्लाभ संगठन में की अगर एक महिला की मदद हो रही है तो परोक्ष रूप से पुरे परिवार की सहायता की जा रही है, जब किसी महिला को कोई स्किल सिखाई जाती है वह यह निश्चित करती है की वो स्किल उनके बच्चे भी सीख जाए जिसकी मदद से वह अपना भविष्य सुरक्षित कर पाए।

प्रश्न: निर्माण के जो स्किल डेवेलोपमेंट सेंटर्स है क्या वो जेंडर ओरिएंटेड है ?

उत्तर: नहीं, प्रोजेक्ट्स जेसे उन्नति जिसमे पापड़। आचार बनाना , प्रगति जिसमे काढ़ाइ और सव्यंशक्ति जिसमे सिलाई सिखाई जाती है महिलाओं के लिए काम करते है , इनके अलावा प्रोजेक्ट्स जेसे प्रोजेक्ट उड़ान जो की युवओं के रोजगार के लिए काम करता है और जो विद्यार्थी RSCIT की परीक्षा दे रहे है उन्हें भी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

प्रश्न: भविष्य में आप इस प्रोजेक्ट में क्या सुधार करना चाहते है जिस से इसका लाभ और अधिक लोगो को मिल सके?

उत्तर: यह इस प्रोजेक्ट का पहेला संस्करण था इस वजह से कार्य जल्दबाजी में हुआ था, व्यापारी रक्षाबंधन से दो महीने पहेले ही राखियों के आर्डर देते है, इस बात का अगली बार ध्यान रखकर आगे बढ़ा जाएगा, ताकि व्यापारियों से बल्क आर्डर ले लिया जाए जिससे पिलानी का लोकल मार्केट भी कवर हो पाए और जरुरतमंदों का मुनाफा भी बढ़ पाए।

प्रश्न:क्या ऐसे और भी प्रोजेक्ट्स हमे आने वाले दिनों में देखने को मिल सकते है?

उत्तर: निर्माण सारे प्रमुख त्योहारों पर जरुरतमंदों की सहायता करने के रास्ते खोजता है और BITS के फेस्ट्स में भी हमारा स्टाल लगता है जिसमे जरुरतमंदों को एक मंच प्रदान किया जाता है ताकि वह सामान बेच सके, दिवाली पर निर्माण के चारों चेप्टर और सेंट्रल टीम मिलकर एक ई-कोमर्स वेबसाइट बनाएँगे जिससे पिलानी की सारी महिलाएँ अपने उत्पादों को ऑनलाइन बेच सकती है, और यह प्रोजेक्ट साल भर चलेगा।

यादों का सफर

थोड़ी खुशी, थोड़ी मायूसी का भाव लिए मैं बिट्स के मुख्य गेट से बाहर निकला ही था कि तभी अचानक पीछे से आवाज़ आयी, "बेटा मुझसे बिना मिले ही जा रहे हो?" पीछे मुड़कर देखा तो मैं पत्थर सा जम गया। मेरे सामने श्री घनश्याम दास बिरला जी साक्षात खड़े थे। आँखे मलकर दोबारा देखा तो गायब, मैं समझ गया कि ये सिर्फ़ मेरा एक भ्रम था।

मैं अपने घर जाने के लिए बस में बैठ गया। जैसे-जैसे बस आगे बढ़ रही थी मेरी आँखों के सामने मेरे कॉलेज के सभी अनुभव किसी चलचित्र की तरह गुज़रने लगे। ऐसा लगा मानो मैं जीवन के चार वर्ष पहले पहुँच गया हूँ।

एक नौजवान अभी-अभी अपनी सत्रह सालों की जेल से आज़ाद होकर कठिन परीक्षाओं को अपनी क्षमता अनुसार पार करने के बाद आज बिट्स में प्रवेश लेने जा रहा है। मन में कई तरह के प्रश्न हैं, कई उलझनें हैं लेकिन अपने हृदय में सभी भावनाओं को समेटकर एक नए जीवन की ओर बढ़ चला है।

अपने सहकाक्षी से पहली मुलाकात आज भी याद है, कि कैसे वो बाथरूम से नहाकर बाहर आया और अचानक मुझे देखकर हैरान हो गया। फ़िर हम दोनों का घंटों एक दूसरे से बातें करना, साथ में लेक्चर न जाना और कभी कभी चलें भी जाना, परीक्षाओं के समय पुस्तकालय में देर रात तक पढ़ना।

पहली बार ये समझ आना कि घर का खाना क्या होता है। माँ-बाप के साथ रहने और अकेले रहने में कितना अंतर होता है। "सुबह जल्दी उठूंगा" यह सोच कर सोना लेकिन अक्सर आठ बजे की कक्षा में देर से पहुंचना। देर रात तक दोस्तों के साथ मस्ती करना या रोटुंडा पर घंटों गप्पे मारना। कैम्पस घूमने आए हैं ये कहकर अनजान जगह चले जाना या कभी पुरानी वर्कशॉप के पीछे तो कभी एस०आर० के जंगलों में भटकना। हर एक अनुभव अपने-आप में रोमांच से भरा था।

लैब में एक-दूसरे की नोटबुक में झांकना। वर्कशॉप प्रैक्टिस में नए उपकरण बनाकर अपने इंजीनियर बनने पर इतराना। ये सभी यादें जीवंत रूप में मेरे आंखों के सामने थीं। ये चार साल कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। आज जब अपने दीक्षांत समारोह के बाद कैम्पस से अपनी आखिरी मुलाकात कर रहा था तो पता नहीं क्यों लेकिन मेरी आँखें नम हो गईं। चेहरे पर तो मुस्कान थी लेकिन दिल के किसी कोने में थोड़ी मायूसी भी थी।

आज के बाद न तो ANC की वो पिज्ज़ा ट्रीट होगी न लूटर्स की वो मिडनाइट पार्टी न SAC में दोस्तों के साथ खेलना और न ही रेड़ी पर वो मज़ेदार किस्सों की चर्चा करना। अब ये सब कुछ मेरी यादों की तिजोरी में बंद था और उसकी चाभी मेरे दिल के किसी कोने में दफ़न थी। अब जब भी कभी मन उदास होगा तो इस तिजोरी को खोल एक बार फ़िर निकल पड़ूंगा अपने बिट्स के सफ़र पर।

बस इन्हीं यादों में डूबा मैं बिट्स से अपनी अंतिम विदाई को खुल कर जी रहा था और तभी बस का होर्न बजा और कन्डक्टर की आवाज़ आई "भैया आपका स्टॉप आ गया।"

15 अगस्त - आज़ादी का अमृत महोत्सव

15 अगस्त 1947, इस दिन को हमेशा भारत के स्वर्णिम दिनों में गिना जायेगा और हो भी क्यों ना,आखिर इस दिन हमारे देश को अंग्रेजो की 200 वर्षों की गुलामी के बाद एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में पहचान मिली। महात्मा गाँधी,चंद्रशेखर आज़ाद,सुभाष चंद्र बोस,भगत सिंह जैसे अनेक क्रांतिकारियों के नेतृत्व में संपूर्ण भारतवासियों ने आज़ादी के लिए संघर्ष किया। आज़ादी के इस आन्दोलन में भारतवासियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अंततः 14-15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को भारत को अधिकारिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इसकी घोषणा पंडित जवाहरलाल नेहरु ने अपने भाषण **'ट्रिस्ट वीद डेस्टिनी'** में किया, साथ ही उन्होंने अपने भाषण में कहा कि वर्षों की गुलामी के बाद ये वो समय है जब हम अपना संकल्प निभाएंगे और अपने दुर्भाग्य का अंत करेंगे। तब से लेकर हर वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है ताकि हम देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले महापुरुषों को श्रद्धांजलि दे सकें तथा भावी पीड़ी को उनके बलिदानों से भी अवगत करवा सकें। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 15 अगस्त,1947 को दिल्ली के लाल किले में लाहौरी गेट के ऊपर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया। तब से लेकर आज तक हम इसे एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं।

15 अगस्त 2022 को भारतवासियों ने अपना 76वां स्वतंत्रता दिवस मनाया,भारत सरकार द्वारा इस स्वतंत्रता दिवस को आज़ादी का **'अमृत महोत्सव'** नाम दिया। देश के गौरवशाली इतिहास,संस्कृति और उपलब्धियों को प्रत्येक आम नागरिक तक पहुचानें के लिए भारत सरकार के द्वारा एक पहल शुरू की गयी ।यह पहल भारतवासियों को लोगों की संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास से अवगत कराने का प्रयास है। यह महोत्सव 75 सप्ताहों की श्रृंखला है जिसका आरंभ 12 मार्च 2021 तथा समापन 15 अगस्त 2022 को होगा। इस महोत्सव में हर एक सप्ताह उलटी गिनती चलेगी जिससे लोगों को कुछ नया और पहले से बेहतर करने की प्रेरणा मिलेगी। इससे लोगों में देश के प्रति ज्ञान,आदर, प्रेम और अपनी मात्रभूमि के लिए परोपकार की भावना विकसित होगी। यह महोत्सव भारत के लोगों को समर्पित है,जिन्होंने न केवल भारत को अपनी विकासवादी यात्रा में लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है,अपितु भारत 2.0 को सफल करने के दृष्टीकोण को सक्षम करने में अपनी भूमिका निभाएँगे।कोरोना वायरस महामारी के दौरान भारत ने आर्थिक संकट को झेला। इसलिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस 2022 की थीम **'नेशन फर्स्ट,आल्वेज़ फर्स्ट'** रखी है जिससे हमे **'मेक इन इंडिया'** की प्रेरणा मिलती है। स्वतंत्रता दिवस के सप्ताह में सांस्कृतिक मंत्रालय भारत सरकार द्वारा **'हर घर तिरंगा,घर घर तिरंगा'** नामक अभियान शुरू किया गया जिसके तहत प्रधनामंत्री के नेतृत्व में देश के हर घर में तिरंगा वितरित किया गया। जिसका सिर्फ और सिर्फ यह उद्देश्य था कि छोटे और लघु व्यापारियों एवं गरीब लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक की जा सके। इस वर्ष प्रधानमंत्री के 74 मिनट के भाषण में उन्होंने भ्रष्टाचार,भाई-भतीजावाद, पारिवारवाद,आदि विषयों पर बोला।

बिट्स पिलानी कैम्पस में भी काफ़ी हर्षोल्लास के साथ 76वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। छात्रों के अवकाश होने से उनकी अनुपस्थिति के बावजूद उत्साह में कुछ कमी नही दिखी,विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सौविक भट्टाचार्य, निर्देशक प्रो. सुधीर कुमार बरई, आदि की मौजूदगी में ध्वजारोहण हुआ जिसके तत्पश्चात देशभक्ति से भरे हुए सांस्कृतिक गाने गाये गये,अपने कर्त्तव्य निर्वहन की प्रतिज्ञा ली गयी और अंत में पौधरोपण किया गया।

माणिक्य, वत्सल, प्रत्युष, मनाल, मोहनीश, मानस

परीश्री, आर्यन, अदिति, भूषण, हार्दिक, संस्कार, लाम्बा , हर्ष, वासु, रेहान, शाल्मली, हेमांग

सर्वेश, **जैनम**, देव, ऋत्विक,आकाश, आरुषी, आर्यमन, सूरज, आर्ची, निशिका, भव्य, हिमांशी, आदित्य

मौलि, अमृत, मल्लिका, वैभव, सर्वाक्ष, वैष्णवी, वैभवराज, चेतन, विदित,पुलकित ध्रुव, अनुज, अवि, सार्थ, वंश, अक्षय, निकेश